

सोम लता

रघुनाथ कौल (दास कश्मीरी)
284, कौल निवास
सनत नगर, बाइपास
श्रीनगर (कश्मीर)

श्री महादेव जू भान, खवज बाग, बारामुला (कश्मीर)
तथा श्री स्वामी महेश भारती ऋषिकेश (हरिद्वार)
के सौजन्य से इस यज्ञ को सम्पूर्ण आहुति मिली ।

1988

प्रथम बार ५००

मूल्य केवल श्रद्धा

प्रस्तावना

श्रीरघुनाथ कौल बचपन से मेरे मित्र रहे हैं। मुझे याद है कि जब कभी हम दोनों उनके गांव (सुनिम, ज़िला बारामुला, कशमीर) में या श्रीनगर में मिलते तो कहीं पास के निर्जर स्थान में घूमने जाते या किसी एकान्त स्थान पर बैठने का अवसर पाते थे। घण्टों चलते या बैठे रहते। इस संगति में हम क्या वार्तालाप करते थे, यह कहना अब कठिन होगा। परन्तु संस्कार बश इतना कहने में कोई आपत्ति नहीं कि हम सत्सगवार्ता में ही व्यस्त रहते थे। साथ ही अपनी अपनी आप बीती एक दूसरे को सुनाते और अपने को हल्का महसूस करते।

संसार की स्वाभाविक उथल-पुथल से गुज़रते हुए भी हमारी यह शुद्ध मित्रता बनी रही। अपनी अपनी वृत्ति और अपने अपने गहस्थ में व्यस्त होते हुए भी कभी कभी एक दूसरे की याद हमें सताती थी। तभी एक बार मैंने उन को पत्र लिखा था :-

बस

इतना ही था प्यार सखे।

जाल नहीं जब बुन पाये थे

चिर-परिचित से हम आये थे

चिर सहचर रह रह कर प्यारे

अब विरहानल धार सखे—इतना ही०

यौवन-श्रम से तिनके लाये
    हमने, तुम ने नीड़ बनाये
इन नीड़ों के अन्तर्हित में
    बाहर भूले प्यार सखे...०

कोयल की वह कूक मनोहर
    सुनने में भी भूल हुई क्या।
कागों के कांय कांय में
    दिन का होता वार सखे...०

वीणा के दो तार मिले थे
    मिलकर पहली बार हिले थे
फिर भी क्या मस्ती में होगा
    जीवन का उद्धार सखे..०

कोयल आई पीले आये
    घन भी अम्बर को नहलाये
इस उर में अब कब आयेगा
    भूला सा वह प्यार सखे...०
बस, इतना ही था प्यार
    सखे।

अस्तु हमारा सौजन्य इस वृद्धावस्था तक भी एक दूसरे को सन्तोष देता रहा है। हम अपने को कवि कहलाने का साहस तो नहीं करते, परन्तु भावुकता की गम्भीर अनुभूति में जो कुछ भी हृदय की छलकन बाहर गिरती है वह रोके रुक नहीं सकती।

श्री रघुनाथ जी ने अपने भावों का प्रदर्शन कई कविताओं में किया है जो वे मुझे समय समय पर सुनाते और आनन्द - विभोर बनाते रहे हैं। इस प्रकार अब तक उनकी कविताओं की कई पुस्तिकाएं छप चुकी हैं और जिस सहृदय जन ने उन्हे पढा उसने मुक्तकण्ठ हो सराहा। अब तक उनके छपे संकलन यह हैं...

१. शारदा प्रसाद २. मणि माला ३. कुसुम लता

अब रघुनाथ जी अपने अनुभवों तथा मर्म-स्पर्शी उक्तियों को एक और गुच्छ में प्रस्तुत करने जा रहे हैं। इसका नाम 'सोम लता' निश्चय-पूर्वक ही रखा दीख पडता है। पारमार्थिक सोम अर्थात अमृत की लता का आश्रय लेने से ही जीव यथाथ सुख-शान्ति द्वारा अमर - भाव को प्राप्त कर सकने का प्रयत्न कर सकता है। यही उसके सर्वदुःख निवृत्ति और परमानन्द-प्राप्ति का साधन है। अतः उनका यह प्रयास इस विधा में सराहनीय है।

अपने सात्त्विक बिचारों को प्रकट करने में भक्त को किसी सन्त अथवा सज्जन से प्रेरणा अवश्य मिलती है।

रघुनाथ जी को यह प्रेरणा स्व० श्री नीलकण्ठ जी (डब ग्राम निवासी) से कृपा-पूर्वक प्राप्त हुई है। अतः इन के वाक्यों में माधुर्य और आकर्षण होना स्वाभाविक है।

विज्ञ लेखक ने यह पद्य-पंक्तियां रामायण तथा भागवत् महापुराण से विषय चुन चुन कर अपने आध्यात्मिक जीवन में कुशलता से जोड दी हैं। लगता है कि इन पुराणों के पात्रों द्वारा उन्होंने अपने आध्यात्मिक जीवन की अभिव्यक्ति की है और इस प्रकार अपने आराध्य देव को रिझाने का प्रयत्न किया है।

यह पद्य-गीत कशमीरी भाषा में समय समय पर उर्दू तथा देवनागरी दोनों लिपियों में छपते रहे हैं जिस से अधिक जनता को लाभ मिला होगा। इस पुस्तिका 'सोमलता' को भी देवनागरी पाण्डु-लिपि में बनाने का श्रेय मुझे मिला। लिखाई में देरी होने से इस पुस्तिका के छपने में अवश्य विलम्ब हुआ। इस के लिए क्षमा प्रार्थी हूं। पर जनता जितना अधिक इन विचारों को हृदयगम करेगी उतना पुण्य-भागी मैं अवश्य हूंगा।

31-जनवरी, 1986 जानकीनाथ कौल 'कमल'

ॐ श्री गणेशाय नमः
नमः श्री गुरुपादुकाभ्याम्

१ आदि दीव

आदि दीव, सुरहत च हर दमन
नमन .चे छ्यिना सा'रिये

फिकिर सूत्य क्षण क्षण प्राण छिम मे हरन
गा'मच मे बुद्ध हा'य हा'रिये!
अनजानस कँह मन छुम्न शमन ॥ नमन०

संसार,क्य भूग खुश छिम मे यिवन
पाप,क्य खा'त्यमत्य भ'ारिये
अहंकार मद-होस्त मे छुम्न हमन ॥ नम०

वा'स सा'र गयम होशि छुस डलन
कालन्य मे वा,चम वा'रिये
वुज़िथ त डीशिथ ब, छुस चमन ॥ नम०

गर-बार शुर्य-बा'च वुछ्य वुछ्य म्या'निय
सामान छुमना मे जा'रिये
मायाजालक्यन जाल्यत ब भ्रमन ॥ नमन०

छुक च,य दयावान नाव छुय भगवान
क्याह मेति बोज़ विल'जा'रिये
मुश्किल आसान दूर कर मे गमन ॥ नमन०

अज्ञान निवार्तम, वथ मे हावतम
कास्तम च़ सा'रय सा'रिये
दास गज़,रावतम, दूष कर मे शमन ।। नमन

वृषबस खसिथ छुख ह्यथ वुमा द्रामुत
आमुत च़ बडि दरबा'रिये
हरमुख पर्वत करवुन च़ रमण ।। नमन०

दीवादिदीवस च्यय परम शिवस
यछ पछ भरान आय सा'रिये
रुघनाथ दासस ति फुलराव चमन
नमन चे छियना सा'रिये ।।



२ गुरुस्तुति

सत्गुर, लगयो छम चा'ञ लादन ।
पम्पोश लागय दुन पादन ।।

च़,य छख गुरो च़'य छुक ब्रह्मा,
च़,य विष्णो महेश ह्यथ उमा ।
डीडचवोञ गणपत करान चा'ञ साधन ।।०

च़,य छुक दयाये हुन्द सागर
च़,य शक्तिमान आ'सिथ दिगम्बर
त्राव अमृत वर्षुन युथ ब. शेहलाव, तन०

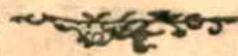
छुस जन्म जन्मन हुन्दुय ब त्रेशहोत
पननि अथ त्रेश चाव युथ फेर पोत!
जार बोज़ वार, पा'ठय म्याञन नादन ।।

च'य शुराह कलायि पूर छुक सम्पूरण
छुक जगत पालन त्रे कारण
राग, बानि सूत्य पोज्ञ वुजि नाग,रादन॰

असार संसार छ'लराबान भ्रम
अनि गटि मंज़,य गोमुत ब, गुम
टोठतम सदा श्यामरूप वुछ, हन हन॰

तिछ़ दया करतम निर्मल बज़म मन
द्यव, यिन, गछ़नस गछ़िहेम छ़यन
ब'ति महादेवस कल, वन्द पादन॰

दासो पान वथराव गुर, पादन
कन था'विय च्यति फर्यादन
रुघनाथ ह्यस थाव्र यिमन सम्वादन
पम्पोश लागय दुन पादन ॥



३ रा'ज्ञायि रोट्टुम दामन

रा'ज्ञायि सुब, शामनय ब, मोठ्य दिमना नामन,य
चूनि जरसय जामन,य म्य स्यद करि मनिकामन,य
तुलमुलि छ़क थानस मनि मंज भास अनजानसय
पान वन्दहय मुकामन,य म्य स्यद॰

सुनसुन्द च्योन मन्दर, शुभान छक च,य तत् मन्दर
मुक्तजालार, बामन,य म्य स्यद०।

अमर्यतकिस कुण्डस,य भक्तय ईवान छि बछिनि तिय
रग, रंग, रूप नामन,य म्य स्यद०

श्रवण करिथ ध्यान धारान, पूजा करान यिम लोलसान
प्रावान छि विश्रामन,य म्य स्यद०

मीठच दिमहय पादन,य करतम क्षमा अपराधन,य
अ,छ ब, जरहम सामन,य म्य स्यद०

कँह न्यथ योत् छिय यिवान, कँह व्रत चोनुय छिय धारन
आरति ति सुब शामन,य म्य स्यद०

यिम यमि भाव, योत यिवान, फलस तिम तत छिय निवान
स्यद बनान छख कामन,य म्य स्यद०

गोमुत छुस ब बेबस, मा'ज्य हाल वन्न भाव, कस
लोगमुत छुस ब, पामन,य म्य स्यद

कास न, असि वन्न व्याध च,य दीवो बोज त, असि नादच,य
पुक्त सपदाव खामन,य म्य स्यद०

सार्यन,य दित, दर्शुनुय, भाव अमर्यतकुय वर्षुनुय
दिल फुलन खास, आमन,य म्य स्यद०

माल, कर, मनपोषन,य म्य मत, डालतम होशव,य
गोब म्य थव गुणग्रामन,य म्य स्यद०

दासस छु अभिलाष यिय
दर्शन हाव प्रकाश च,य
रघनाथन रोटुय दामन,य
म्य स्यद कर मनिकामनय ॥



४ राम - कृष्ण

राम,रूप, छांडोन डण्डकवन
कृष्णरूप, छांडोन बिन्दराबन

अ-दोरुय यि संसार सोरुय ज़ान
दशरथस,य ख'च् शापश्च हान
क्षण, क्षण, दिन, दिन, राम, राम, वन — राम, रूप०

वीर्वकिय मातायि युस छु जामुत
नन्दगोयुन घर सु छु च़ामुत
स्वर्गद्वार सपञत्र बिन्दरावन—कृष्ण रूप०

कीकियि मन,सय वोथ यि खयाल
राज़स करनय यहय चाल
भरत जी राज़, बनि राम गछि वन ... राम रूप

गूपियन सूत्य ओस खेल मारान

राधायि सूतिन रास खेलान
दीवता आ'स्य पोष-वषुंन करन ... कृष्ण रूप०

दशरथराज़, करनोवनय प्रण
कीकियि सावधान थोव अद मन
राम, जुव वनवास चुदाह्न वर्यन ... राम रूप०

बलभद्र,र बोय ह्यथ ओस फेरान
अलरस सायन'य ह्यतिनय प्राण
जसदा माता आ'स खोचन ... कृष्ण रूप

सीता माता राम लक्ष्मण
बुज़ं जाम, वलिथ गय तिम वन
दशरथराज़स क्याह् छु सा'पनन ... राम रूप०

गूर्यं शुर्यं त गूर्यं बायि आस, नचान
जसदा माता आ'स वुलसान
सास, मुख गीत गेव्य शीशनागन ...कृष्ण रूप

मातामाल. मह्त लारान आव
भगवान ज़ोनुन त, कोरनस माव
यम्य ज़ोन पोज़-अपुज़ सु छ सत - ज़न ... राम रूप०

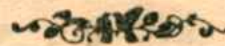
राक्षस त, दैत्य कम कम वा'तिय
भगवान ज़ोनुख त, गय मूक्ती
कंसस मारवुन यूर्यं अन्तन .. कृष्ण रूप०

ज्ञान आव भरतस त, क'रनस क्राव
वन, मंज़, रामस ह्य'च़्नय खाव
तखतस ख़ाव थ'वन त पान, च्यूठ बुन ... राम, रूप०

यिथय पा'ठ्य वक्त, वक्त, वेष धारण
परीक्षत राज़, सावधान थाव मन
सप्ताह पारायण कोर शुकदीवन ... कुष्ण रूप

सा'रिय क'यंतोस जय जयकार
द्यव, - भवसर, मंज़, लभहव तार
पान वन्द कृष्णस त, राम छु बनन ... राम, रूप०

रुघनाथ प्रारान दासस तल
मनमूहनन मन करुम निर्मल
सत-रूप स'च़् चानि ब'नि सत - ज़न ... कृष्ण रूप०



५ ध्यान

ओंकार रूप, सुरतन चय नाराण
अन्त,समयस ज़ान थाविय च्य भगवान

गुड़, गणपतजियस कर नमस्कार
युस छु सार्यन,य कारन दिववुन तार
वल्लभायि-सूत्य क्याह छु शूभायमान ।।०

गुर छु ब्रह्मा विष्णु ब्यथि महेश्वर
कर हरदम यिहुन्दुय च'य आ'वंर
अञ्जलि गण्डिथ रोज़, गछ़िय सार्यचिय ज़ान ॥०

ब्रषभस खसिथ ह्यथ उमा सूत्य सूतिय
बडि दरबार आमुत छु पान, शिवजी
भक्तिज़नय पानय छु रक्षा करान ॥०

शीषनागस प्यठ श्रुय पान, विष्णु
वुछ़ चतुभुंज़ रूपस लगहस बां
लक्ष्मी जी पादन मुठ छ़स दिवान ॥०

जय त, विजय आसवञ्य तस छि पहरदार
अष्ट-सिद्धि सूत्य छ़ुस खंदमत-गार
नाभिकमल, मंज़, बह्मा द्राव शानशान ॥०

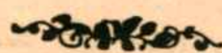
काम क्रूध लुभ मूह अहंकार च़य' त्राव
नव द्वार थाव बन्ध वञ्य कर म. टाव टाव
शम, दम, यम, नेम, रठ मन तय प्राण ॥०

कुकिलि हिन्ध षांठ्य च़य कर गोविन्द गू
अजपाजप न्यथ कर सोऽहं सो
ह्यस या'विथ प्रावक च़य नव-निधान ॥०

वस सोदरस होशि साम ओष प्रावक
आथि आमुत लाल च़य यिन, रावरख
लाग डूंगल कर वञ्य च़य ति मान-मान ॥०

कर कर्म, फल निश रोज़ चय निर्मल
स्यल वथरस वुछव मा लारान ज़ल
वासनायस मोड फिर था'विथ ध्यान ।।०

भवनाये रोज़ कर भगवत्-ध्यान
रघुनाथो सुरतो चय भगवान
दासभावय नेरिय सोर अरमान
अन्त समयस ज़ान थाविय च्य भगवान ॥



६. दीवियि ज़ार,पार

दीवी कास्तम मूह - अन्धकार
बोज़तम चय ज़ारपार ।।

तंग ओननस संसारन, ड्रञ्ज रोज़ान छुम्न मन ।
द्रोह दर गोम सूरुम लुकचार ... बो०

मंज़ दययाव, ईरवुष्य नाव, विषयन हुन्द पत, वाव ।
अथ रटिथ,य चय म्य बोठ स्वार --- बो०

क्रूठ दोह गोम ज्यूठ व्यवहार, पोत फेरनस छुम्नवार।
वष्य चालिथ हाकन, यूत वार ... बो०

थोद तुलतम करतम सत, बीठमच छम म्य वथ कथ।
चन्द छोन छुम अथि छुम्नहार ... बो०

भक्ती दिम पुक्त बनि खाम, युथ प्रावहा मूत्तधाम ।
करतम दया छक च् मुक्तार ... बो०

शिव-शक्ति न रोज़ान भिन, कुस ह्यकि करिथ वर्णन ।
मकन छक दिवान मूत्तद्वार ... बो०

ख़िव च् जाला हारि पर्वत, तुलमुलि राज्ञा च् सत ।
इष्ट दीवी म्योन छुय नमस्कार .. बो०

नाव चोन छुय सहस्त्रनाम, नित परहा सुब श्याम
चय मोल - मांज चय घन - द्यार ... बो०

आसवुन छु चोन बोड़ दरबार, मुकलावान च यकबार,
मा'ज मोरुय छुय च यख्तियार ... बाज़नम०

दास-वत्सला छुय वनान चेय, रघुनाथस गछ्र त द'य
क्या गछिय कम यियतनय आर ... बो०



७. वन्तो कति प्रारस

बुद बुद म्यान बोबोश वन्तो भगवानस
नादन ग्य थाविना घोष — वन्तो कति प्रारस ॥

बाग बन्योम मंज़ माघस, आसुन गोछ बहारस,
फुलवनि सोन्त यियि ओश ... नत क्या कर हरदस ।

चमनवार क्या बना'ध्यमस, शोक सान ब्योल वोंबमस
जाफर्य त ब्यथि अछ-पोष ... रोशिमोत यियिबन मस ।

गुल त गुल्ज़ार लोग्यमस, वेरि तहज़िसम श्रुतमस,
यछि पछि सोम्बरिथ पोश ... शेरि लाग श्रीरामस

काम क्रूध लूम मूहस, कर क्या पथ कोरहस
अहंकारन श्रुतनम म्य जोश ... दया तुहंज़छम म्यबस ।

दर्शुन हावि अनाथस, सख्य हाथ रघुनाथस
दासस ति त्यलि खसि बोश ... यलि तसति ज़ार बोज़हस ।



८. मा'जय वन्तास म्यान

आश - तोष नाव छुस
करिना उदार सोन
मा'जय वन्तसि म्योन, मा'जय वन्तसि म्योन ।

लुकचार प्रोवम यावुन रोवम
बद - मस्ती ति प्रावम
वन्य आम बुजर त्य याद प्योम नुन्द बोन•

काम क्रूध लूम मूह अहंकार मस चोम
याद कोरमुत गशिथ गोम
चय याद पावतस शेरिना म्य कर्म लोन•

अन्य सम्बन्ध पा'ठय संसारकिस चक्रस
फीयं फीयं आम्न केंहति हस
नेरनुक उपाय करि, केंह लोबुम्न दर चोन ... मा०

बन्द छुस गोमुत पापव वोलमुत
छुस शर्मि सत्य गोलमुत
मुकलाव्यमना छुस नाऽब बन्द चोन ... मा०

हीमाल पर्बतस प्यठ रोज़ान छुय
मृग-चम त बस्मा मलिथय छुय
चानि सत्य प्रज़ल्योव योहोय छुय मोल सोन ... मा०

सृष्ट-थ्यत-संहार कारक युस छुय
पालना करवुन ज़गतस छुय
आद्य अन्त अम्यसुन्द काऽसि नय प्रज़नोव ... मा०

हटि वासुक कल-माला ना'ल्य छस
डयकि चन्द्र मटि गंग वमान छस
त्रिशूल धारी युस छुय आसवोन ... मा०

हरमुख परबत सत्य छस हा'री
वृषभ-वाहन फेरान चोपा'रिय
नीलकाण्ठ मकयन छुय सुय रछवोन ... मा०

मक्तवत्सल माव छुस भटा थाऽरी
वीद पुराण वखनान - आय साऽरी
अथ शिव - नावस वन्दसय कबील - क्रोन ... मां•

शिव - शिव जपवन्य सा'रिय यलि आय
मनसय थाविथ अम्यमज़ राय
म्यति याद करिना चलिहे म्य ज़ूनि ग्रोन ... मां॰

कुस ह्यकि करिथ अम्यसुन्ज़ तुता
वीदवान आस्वतन कांह्ति कोह्ताह्
मुखमन क्याह् कार यस आसि अथ छोन ... मांः

आशावान आस दास मऽ तल च्यय
दर्शुन हाव्यम ना चलिहेम म्य खय
क्या रुघुनाथस त्राविना मलाल प्रोन
माऽजय वन्तसि म्योन ॥



६. हट्टिकुय वन्दसय रथ

मलाल, त्रा'विथ दर्शुन दियिना
हटिकुय बन्दसय रथ,

सालाह् करिना यथ दिल - बागस
बुल्बुल बऽ तति ज़ागस
मन ना'विथ अनन गुल्ज़ार छाविना — ह॰

यचकाल गवना बालि म्य प्रारान
खूनि - जिगरस हारान
हीथर बर गयस पायस प्योयना — हव

ल्यूखुम क्या दय यथ म्यानिस ड़्यकस
दृयंय किथ ज़रिथ ह्यकस
वेदार किथ ज़रिथ ह्मकस

हटिके रत,सय्त्य नामय लेखस
श्याम सुन्दर कृष्णगन्धरस
वीलज़ार बोज़िनायूर्य मे यियिना — ह०

फिराक थोवनम यथ म्या'निस मनस
श्राबम्य शीन गाजनस
मीन छम दीन ज़न नदि ज़ल फेरिना — ह०

सुय आकाशस सुय पातालस
सुय जंगलस बालस
मनि आसिथ सुय वनि मे यियिना — ह०

दि यना दर्शन पननिस दासस
तीज़ो - वनवासस
गणिशि घठ छारिथ शारदायि यियिना — ह०



१०. हिमालय पर्वतच राज़र्येञ

हीमाल पर्वतच छखय राजियंनिये
हारिये बोज़खना ज़ार साऽनी

त्ययत्रह् करोर दीव ब्यथि सत-ज्ञानी
अन्य अन्य रुज़िथ गीथ ग्यबानी
गणपत डेहि प्यठ पहर दिवानी — हा०

प्यठ गोशस छख पान रोज़ानी
सिंहस खसिथ क्याह् शूबारी
अरदाह्व बुज़व छखय बागराबानी .. हा०

स्यद् पीठ अति छुय युसति ज्ञानानी
प्रद्युम्न पीठ ब्यथि छुस लेखानी
छुय नमस्कार सोत शारिका भवानी ... हारिये०

केंह् लारि ननवायें योत छि यिवानी
केंह् सहस्रनामी छिय परानी
केंह् व्रत चोनुय साऽर्जाछिय धरानी .. हा०

अलम चानि लछि-बज़ क्या छे ताबानी
कुब मन्दरुक क्या ज़ोता'नी
तिय वुछ वुछ मन असि छु लुभानी ... हा०

नाव चोन सुन्दर आनन्द दिवानी,
पद्म - षादन हंज़ दित असि ति ज़ानी.
षाप गाल शाप कास ही महारानी,
हारिये बोजखना ज़ार सानी ।

नित प्रबातस दोरान दवानी
लोल - पोष ह्यथ इवान छिय परानी
यस छे यि इच्छा तस ति छख दिवानी
हा'रिये बोजखना ज़ार साती ।

योदवय कु-पुत्र माजि आसानी
माऽज छन तत कुन ज़ाह् वुछानी
हर दम रोज़ान छेख मेहरबानी ... हा०

रुघनाथ दासस तल प्रारानी
मन किथ प्रदिक्षण छुय दिवानी
थावतस मंज़ूर छख च़ लासानी
हारिये बोज़खना ज़ार सानी ।।



११. शैल-पुत्री (वरमुल)

शैल पुत्री लगय चा'निस नावस ।
दर्शन चाऽयुक छुम म्य हावस ।।

छारनि द्रायोस गाम - शहारस
पय आम वरमुलि छख च थानस
डेडि प्यठ गणपत ब लगस नावस ... द०

अन्य अन्य कोह त बाल लगिमत्य छि दावस
त्य करोर तीर्थ - ज़ल तन ब, नावस
सीर नन्दकीश्वर लगान ज़ेठ - मावस ... द०

मेल क्या लगान वुछ कूटी निथंस
कनि - माज़ि ग'छय ज़े दरशनस
तार दिज़ि बुदमति वुछ नर सिहस ... द०

पित्र श्राद करिथ प्यण्ड भाव निथंस
गंग-ज़ल चथ खस गुसा'ञ टेंगस
तति सत कुण्ड वुछिथ नम राम-कुण्डस ... द०

अमयंत ज़ल सऽत्य मल तुल पानस
शुद मन प्रा'विथ अछ मन्दरस
शोमरिथ मन थाव नोमरिथ पानस ... द०

पूज़ा करत, चय लोल - अस्थानस
भाव किय पम्पोष शेरि लागतस
कन्द, दुध, नाबद, खिर मरुस थालस ... द०

ओंमकार रुप छय प्रत मुकामस
वंदसय ज़ुव जान अथ नागस
तार दिस मवसर कठिनिस तारस ... द०

माज़िपूर प्रदिक्षण लीखिथ पुराणस
अर्धं प्रदिक्षण दिज़ि शिव नाथस
धूप, दीप, चामर ज़ाल काफ़ूरस ... द०

योदवय गलर्ता गछान नाबकारस
माज्य छन वुछान तल - कारस
रछान छय सुय खासस त आमस द०

दास छुय श्रारान चानिस दासस
मत लागतम मे अत - गतस
दिखना दर्शुन क्याह् रुघनाथस
दर्शन चान्युक छुम म्य हावस ॥

---

१२. जानान वला यूर्य

दर्शुन म्य हावतम पान, भगवान वला यूर्यं ॥
च्यय रोस्त ब गोसदेवान, जानान वला यूर्यं ॥

मन्थराथि मर्यनस कन, कीकिय फेरिना मन,
मंग राज़स वरदान ... भगवान

दशरथ सुन्दुय प्रण, मा'नित गोख चय वन
[illegible] ... भगवान

आसिम म्य कर्यमत्य पाप, राजस ति ओसुय शाफ,
ऋष-बालकुन वद्दान ... भगवान

राज़ गव चोन ख्यत गम, बुज़ंजाम च्यय वलिथम,
ओसुय च्य करुन पान ... भगवान

बोतुम म्य पा'गाम तूयं, लारान ब आसय यूयं
ब्रूज़िथ बि गोस द्दारान ... भगवान

छुक चय म्योन सरताज, शूभ्या म्य करुन राज,
बन्तम ाम्र मेह्रबान ... भगवान

यूयं यित म्योन लाल, प्रयमक्य मरह्य प्याल,
चतमो म्यानि दुर्दान ... भगवान

राजस ब मारय लथ, नेर च्यय पथ कर गथ
शमहस यिथ परवान ... भगवान

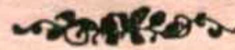
चय छुक म्योनुय होश, नादन म्य थवतम गोश
हा प्राणन ह्न्दि प्राण ... भगवान

परिवार ह्यथ यिमय, मनवथ छुम निश्चय
तत अन चोन निशान ... भगवान

सीता त ब्युयि लछमण, छिय चान्य पाद सेवन
बऽय ज़ोनथस बेगान ... भगवान

अंज़रावान छुक न्याय, यस छय चानिय माय
दिवान तस निर्वाण ... भगवान

दासो अभिमान त्राव, प्राव भरथुन स्वभाव
रघुनाथ अद् यियि पान ... भगवान



१४. वलो यूर्य श्री राम

वलो यूर्यं श्रीराम ! सीता बऽ मरयो
म्योनुय प्राण छुखा चय ॥

तन मन आयत च्यय छुय म्योनुय
पान ज़ानान छुखा चय
दूरिंर चोनुय ब किथ जरयो — म्यो०

कमि अपराधय ब च्यय त्रावथस
दिववुन ज्ञान छुखा चय
पानय ज़ानख त बऽ क्या करयो — ०

बऽ हो ददं सख्तन मंज़ ज़ंदेयस
म्याज़ श्रमान छुखा चय
हरदनि वावय पन ज़न हरयो — ०

त्राविथ लक्ष्मण कुनिय ज़न्य मे गोम
तिय ज़ानान छुख चय
ह्रोल गोम जिगरस लोल च्यय मरयो...म०

लक्ष्मण सोज़ाम त्रेशिय अनने
कोन बोज़ान छुखा चय,
बेह्रोश सापनिय ह्यस छुमन ज़रयो ... म०

कुल्य लंज़ि अलोन्त आवखोर थोवनम
मयोन ज़ान पान छुख च्यय
फेरि फेरि पोश्य प्योत्र राम राम परयो ... म०

नय रथ ड्यूठुम नय वुछ म्य लक्ष्मण
को सोचान छुखा चय
बय जगलस मज़ छ्न क्यथ मरयो ... म०

ह्रान क्या खाथंम ह्रा प्राण नाथो,
पान बोज़वान छुखा चय,
वनचरनय मज़ बय मा डरयो ... म०

आशा चान्य छम घटि ह्रंदि गाशे
पान, भगवान छुखा चय,
च्यय छस शरण चोनुय ध्यान धरयो ... म०

दास छुस प्रारान दासस तल चेऽ
म्योन जानि - जान छुखा चय,

रुघनाथ चानि अ॒यि मबसर तरयो --- म०
म्योनुय प्राण छुखा चय ॥



१४. करयो मन्-पम्पोशन मालय

करयो मन-पम्पोशन मालय, यित अज़ सालय लालो लो।
यित अज़ सालय बालगूपालय, यित अज़ सालय लालो लो॥

दीवकियि निश ज़ाख कांद मंज़ लालय,
वसुदीयस रोटुख नालय लो,
बिन्दराबन वातनोवनख कालय ... यित०

नन्दस त जसदा॒यि न्यन्दर प्ययि लालय
वसुदीवन तति थोवुख लालय लो,
चानि बदल कूर अ॒निन द्राव दूम्बालय --- यित०

जसदा॒यि कुछि मंज़ रोछनख लालय
नाव कोरनय, कृष्ण लालय लो,
बाल लीला हावथस च्यय नन्दलालय .. यित०

कंसन बूज़ यलि रुदुस न हालय
वसुदीवस निशि आव लालय लो
दोपनख क्या ज़ोव, कयूं न म्य हवालय ... यित०

अथस क्यथ कूर रटन बेदर्द नालय,
थारिथ दिचन पथर लालय लो,
वुज़मल बनिथ आय कोह-संगरमालय ... यित॰

पूतनायि ज़हर बब भरि गूपालय
दुध चावनि आयि लालय लो,
अकि दाम प्राण च्यय कडिथस लालय ... यित॰

ऋष तय मुनि आय जय नन्दलालय
बाल लीला वुछिथ गय निहालय लो,
तप ज़प सुफल गोख, गय खुशालय ... यित॰

गूर्य शुर्य त गूर्य बायि सऽत्य ह्यथ नालय,
हाविथक कम लीलायैय लो,
राधायि सऽतिय मायँत छालय — यित॰

दुध चूर क'रथ च्यय गूपालय
आशचर होवुथ जसदाये लो,
राक्षसन संहार कोरुथ च्यय लालय — यित॰

रास - मण्डुल क्याह शूमान लालय
वुछिनि आय दीव चोन खत-खालय लो,
शुभ वीला द्रायि तमि विज़ि लालय — यित॰

यलि यलि राक्षस बडान आय लालय
त्यलि अवतार धारान गूपालय लो
बलबदर बोय ह्यथ करान रक्षपालय — यित॰

दास छुय प्रारान त्रिजगतपालय
प्रावतस सोरुय मलालय लो,
रघनाथ च्यय पथ गव मतवालय — यित०
यित अज़ लालय सालय लो ॥



१५. वैष्णव देवी

हिमालय परबत चोन दरबार
वैष्णव दीविचि छु जयजयकार

शहर गाम यात्री छिय यिवान
कटरा वातान बड़ शोक सान
बसन त काररन हुन्द बूछार — वैष्णव०

नम्बराह् रटिथ अति खुश छु यिवान
सामग्री ह्यनस मज़ करान मान मान
वस्तर त भूषण पोशि अम्बार — वै०

तति पत बाण - गंगायि छि नेरान
मातायि पननुय पान पुशरान
फुलवब्य क्या लगान छय कतार — वै०

तन नाविथ यन ह्यथ सावधान
एतिकाद ह्यथ अथ लर डख,रान
विज़ि वनान मातो दियि तार — वै०

यन - रात वति किञ हेख खसान
ग्यवान गिन्दान व्यथि क्याह् नचान
मशरिथ सा'रिय पतिमिय कार — वैं०

वंछि वंडि मातायि नाद लायान
ॲंस्य छिय सारिय आशावान
वति माय-चारुक करान व्यवहार — वैं०

थख दिय दिय मोल मायि पकान
जायि जायि पूज़ा क्याह् छिय करान
मन्दर छि वारयाह् कर कत्य शुमार — वैं०

मंज़िलाह् कडिथ अधकुवारी छि वातान
गर्भयात्रा करिथ थख छि दिवान
ख्यवान त च्यवान ह्यथ परिवार — वैं०

कैंह् अति रोज़ान कैंह् छि नेरान
'हाथी - मथा' वुथि छु यिवान
गुल्य गण्डिथ करान छिस नमस्कार — वैं०

'सांजी छत' वातिथ फ़क छि त्रावान
अति पत् 'भैरव घाटी' किञ पकान
तति प्यठ लमान छिय विस्तार ... वैं०

नम्य नम्य पकान जल्दी-सान
विय वुछिथ दरबार वातिथ प्यवान
वुछान अतिचय गुफ़ तय गार ... वैं०

गुफा क्या छय शूमायमान
यति पान दीविथि हुन्द छु स्थान
आसवुन छय सुय शेरस सवार .. वैं०

ब्रह्मा विशन महीश अति रोज़ान
मुनियन ति वुछिथ मन छु लूभान
वुछ भरम सालन कँह् मा शुमार ... वैं०

अलम क्या लछि–बज़ छय तावान
घण्टा घरि घरि छय वज़ान
अति कुल इन्तज़ाम करान सरकार ... वैं०

पऽदयव तल गंग छस नेरान
अमर्यत ज़ल मखत्य तस नावान
आरति करान रूज़िथ दरबार ... वैं०

शुभवेला तमिविज़ि छि नेरान
दंशुन करनस लूख छि प्रारान
अन्दर छि त्रावान नम्बरवार ... वैं०

दंशुन करिथ प्रदिक्षणस फेरान
कनक पूयं मोज दिथ अति नेरान
याद छख प्यवान अद घंयुक कारो-बार ... वैं०

सेद्य-साद नाबकार आशावान
मा'ज छय कुनिय नज़राह् थावान
कठिने भवसर छक दिवान तार ... वैं०

रुघनाथ दासस तल प्रारान
चित् किय परमेश ध्यय लागान
दंशुन हावतस छुय उमेदवार ... वैं०
वैंष्णव दीविथि छु जयजयकार ॥



१६. लुलि मंज करयना गूर

लुलि मंज़ करयना गूर गूर चेऽ कलदूर बहारो ।
सोयंव मे लोकचार वलो म्यानि बहारो ॥

माघस छु फागनुन संज़, शिशिरस ति सोन्तुन टंख,
यूयं यित म्यानि शेहचार वलो ... म्यानि बहारो ॥

चितरन फिर आबशार, सबजार फोल गुल्ज़ार,
रम्बवनि खुशरफतार वलो ... म्यानि बहारो ॥

लालज़ार व्यठ गोशान, बुल्बुल ति क्या तोषान,
चमनन हंदि सरदार वलो ... म्यानि बहारो ॥

वहिकस ति ज़ेठस गत, हारन ति करनस पथ,
ग्रिशमच ति ब्यथि दोहतार वलो म्यानि

श्रावुण त बहांद्र्न ताम, आषिदुन ति आम पैगाम,
ब'हराच हंदि वुहजार वलो — म्यानि

कतकन ति दिचनम डाल, मगरन कोहस पामाल,
ज़र चाम हरदनि बाव वलो — म्यानि

कथ कुन चेऽ चुतथम ज़्रोह, हारस मे कोरथम पोह
लोगुथ चेऽ बेआर वलो —

यंथ गयम बाह मे पूर, आश ज़्रम मे यिहम नूर्य,
ज़ोनुम न ग्रोवहम खार वलो — म्यानि

दोहस मे कोर्थम शाम, लोगथस चेऽ दर-धाम
बट कास सूम-सूर्य तार वलो — म्यानि

मस दिथ चोलहम रुव, माविथ कमिस ह्यक बय,
लोगमुत ब छुस गुंजार वलो — म्यानि

तार दिम मे यमि संसार चेऽ रोस कति मुकजार,
मुकलाव खुदमुखतार वलो — म्यानि

दासस छुव दरकार, नोन चय यार अवतार
रुघनाथनि अनहार वलो — म्यानि बहारो ।।



१७. भगवानो रोज़तम सहाये

प्रारान छुस चाने दयाये ।
भगवानो रोज़तम सहाये ।।

कर्मव किञ ज़ीव छुय बनान, माजि गर्भस मंज़ छुय पलान,
संसारचि मूह - मायाये — भगवानो०

गर्भस मंज़ वाद क्या करिथ, ज़न्मस यिथ छुस गछान मशिथय
वाख छटान छुय कमि तां राये — भगवानो०

माऽज मोल छुस रछान लोल सूत्य,
बंध त बांधव रिश्तदार ह्यथ कूत्य,
ललनावान लोल त माये — भगवानो०

मास पोफय मुञ मीठय करवञ
उद इत्बन्ध क्या छिस ज़ालवञ
छिख दपान छुव मुबारक सोनये — भगवानो०

सात वुछय वुछय गण्डान
ज़ातकर्म करिथ नाव छिस करान
घरि घरि बनान रछिनस दय्ये—भ०

बचपनस मंज़ छिस परनावान
जान तालीम छिस करनावान
नेरान छुय अद नौकरीये—भ०

गृहस्थ पालन करिथ क्या मगरूर
शुर्य बनान छिय अमिस त्रे-चोर
माया ज़ालस मंज़ फसान छुये—भ०

लोक चारस मज़ करान ओर योर
खर संद्य पाठय छुय साराम बोर
धन ज़ेननस कुन लगान छुये—भ०

यावनस मज़ छु हावान मस्ती
क्या बनावान छुय रच बस्ती
रंग त रोगन करिथ क्या जाये—मगानो०

कम पदारथ ख्यवान त ख्यावान
भगवानस ति छुय मचरावान
सोरुय छुय दपान म्योनुये—म०

यावनस ति छस प्यवान हावे
सा'र जवानी छस गछान ज़ाये
बुजरच छस इवान अवस्थाये—म०

बुजरस मंज़ छुन ह्यकान नीरिथ
शुर्य त बॉचय छिस गछान फीरिथ
मद बसान छुस सोर मूलमाये—म०

धन-सन्तान व्ययि पुत्राधक
अज़ ताम कस रूदिय सादिक
यति न रोज़ान लरि तय जाये—म०

कम्ज़ोर गछिथ सोरान छस आश
अछनय ति कुनि रोज़ान छुस न गाश
दक डुलनय क्या लगन छुये—म०

यलि सारिय करान छिस खार-बाद
भगवानस अद करान छुय याद
नार बिज़ि क्रूर खननस बोथये—म०

प्रथ तरफ़य क्या गछान छुय गीर
याद यिवान छुस माजि हुन्द शीर
कालच ति छस बातान वारिये—म॰

सोरुय वखत यलि गछान छुस पूर
त्रेश त्राविथ सारिय ह्यनस दूर
राम रामय अद बोलनये...भ॰

आश सार'य छस गछान सूरिथ
सूक्ष्म किच शरीरस प्राण नीरिथ
दर्भिगासस प्यठ थावनये...भ॰

बाख त्रावान नालस दिथ चाक
हाव'भावय बुथिनय मलान खाख
टाठि लाल असि चोलुख त्रा'वथये...म॰

नाल पलव कडनस सा'रिय
श्रान करनस टाठय ब्यथि अटाठिय
जाम वलिथ थावनस शायें... मगबानो॰

तखतस प्यठ थावनस साविथ
राज़कट सन्ध्य पाठय अट करिथ
शेव-शम्भु बोल बोलनये ... भ॰

जान नाकार कोरमुत यि आसान
असि बकतय छु गंज़रन यिवान
केंह वनान जान ओस धर्मिये...म॰

ज़िन्न-ग्रनि प्यठ बार पाठय थाविथ
सिरयि दर्शुन वति करनबिथ
नार दिनसय अथ कायाये ... म०

तर्पण करन अथ-बुथ छ्लिथय
भगवानस कुन ध्यान धर्यंथय
माय त्रा'विथ ज़ालन छाये ... म०

रुघनाथो बेहतो शमिथय, दास माधय रोज़गो नमिथय,
त्राव सोरुय कँह मथाव बकाये
भगवानो रोज़तम दयाये ॥

---

१८. पान पर्ज़नाविथ

संसार निश रोज़ ममता त्राविथ
पान पर्ज़नाविथ वातुन छु तोर

यति आख तोत गछुन आखरकार छुय
काल शहमार छुय ज़न्म-ज़न्मस
वन वन मुचिय चरण रावराविथ ... पान०

सन्तान बाय बंध मतलब यार छिय
ज़ानतो सवार छुय पापुन बोर
कर विचार पान रोज़ पान लबि थाविथ...पान०

त्रिय सन्तान ज़ान अपुज़ व्यवहार छुय
मुह् अन्धकार छुय वुछ प्रकाश
अन्त कालस रोज़ सु स्वरूप प्रा'विथ ... पान

मनि अन्दर परमानन्द थान छुय
साद-संगच किञ तत् प्र'कटाव
गुर-अनुग्रह् चक्तिपात वुज़नाविथ ... पान०

अनाहत् शब्दुक साज़ सेतार छुय
ओम् सोऽहं हंस नादक डोल
धारनायि वार रोज़ द्वार बन्ध थाविथ ... पान०

शिव-शक्ति दर्शनुक च्यय अधिकार छुय
पोज़ भाव योद छु त, अद प्रावख
मन आदर्श थव मल तुलनाविथ ... पान०

आधीन बनिथ तीज़ोवन रुघ, छुय
दर्शुन हावतम प्राव मूक्तधाम
दीन-बन्ध ! रोज़हा ब, तनमन नाविथ ... पान०
पान पर्ज़नाविथ वातुन छु तोर ॥



आवागमनस कुन्य मा छु छयन

१९. मन सुरतन हरे नारायण

माया च ज़ान आसवञ्‌ छे छाया
छायायि दपान छिय काया
ज़ांग्वोल कुस ? यि सिलसिल छुय ज़ानुन --- मन०

यि चे बूज़ुथ त, तिय वञ्‌ डीशिथ
क्याज़ि गछान छुय चे तिय मशिथ
घरि घरे दिवान छुय चेनवञ्‌ --- मन०

भक्तिस दया पानय छु छारान
तोरय तस मेलनस छु लारान
लछि मंज़य अकिस छुय चारान ... मन०

भगवानस कुन कड अख कदम
दह कदम तोर पान यियि यकदम
गीतायि मंज़ वखनोव कृष्णन ... मन०

सुलि गंगायि हुन्द कर दर्शुन
अथ पाद छल चय रठ प्राण मन
श्रान सन्ध्या करिथ कर च तर्पण --- मन०

आध दीव गणपत जी करुन याद
नम गुरदीवस छल वञ्‌ पाद
ॐ नमः शिवाय पर चरण-चरण .. मन०

युह्योय
युह्योय
युह्योय

काम क्
वासनाि
भावनाि

न ज्ञान
माऽजय

युह्योय छुय घन-धार युह्योय छुये बन्ध
युह्योय छुय मनि अन्दर अन्दबन्द
युह्योय छुय पानय ह्यरि तय बुन ... मन॰

यम नियमस प्यठ रोज़ थव कल
शम दम तप सत्य पाद गछि फल
'हरे हरे' तूल्य तूल्य नेरन अद मम ... मन॰

काम क्रूद लूम ब्ययि अहंकार
वासनायि त्रा'विथ छुख च सुखतार
भावनायि सत्य कर च विष्णार्पन ... मन॰

रघनाथ डंजि रूज़िथ थाव मन
दास भावय चय कर सुमरण
यव यिन गछुनस चे गछिय छयन ... मन॰
मन सुरतन हरे नारायण ॥



२०. दामन, रोट म्य चोनुय

त्राविथ यि सोर सामान
दामान रोट म्य चोनुय ॥

न ज्ञान पाठ पूज़ा, न ज़ानय श्रान सन्ध्या ।
माऽजय छुसय अनज़ान ... दामान॰

जान नाकार छुस बय, तोति माऽज बन्द चोनुय
मत ज़ानतम म्य बेगान ... दामान•

योत यिथ कयंम न रत्य कार
खारिम म्य पापन्न बार
पस गोस आसिथ जानान ... दामान०
(ओसुस ना ब जानान०)

अज़ ताम कोरुमन परवाय
बन्न फीरम म्य चान्न माय
बखशुम म्य पनने - पान ... दामान॰

दितम च् अछ़नय गाश
रुय् रोस म्य कांसि हज़ न आश
अथ डालतम चल्यम हान ... दामान०

भक्तिरसकुय अख म्य दाम
चावतम पुक्त बनि खाम
तमि सत्यिन बड्यम शान ... दाम०

माऽज रोज़तम अनुकूल
संसारुक चल्यम शूल
तुता कर ब, पान्न पान ... दाम०

रुघनाथ क्या छे ब'ड कथ
दासस तल बन्यस गथ
शमहस यिथ परवान ... दाम०

२१. क्यानि चोलहम

मनि मंज़ करयो ब, जाय लोलो
क्याज़ि चोलहम म्यानि श्रीराम लोलो ॥

अछ फूरम बेकरार सपदुम दिल
बूजथ गोम मुश्किल शेछ वांचम दिल
ओसुस ब, मातामाल लोलो ... क्य०

बूजिथ यूयं लारान आमो ग्यूर
हाल वुछिथय जिगरस गोमो सूर
यलि गोमुत ओस सुन-सान लोलो .. क्य०

मन्थराये कीकियि फोरमुत मन
मंग राजस वरदान चय वुन्क्यन
वुछ चे नेरिय सोरुय अरमान लोलो ... क्य०

राम वनवास सोंज़ोन चुदाहन वर्यन
गछि रोज़न वन सुय वार थाव कन
अद भरतस केह न परवाय लोलो ... क्य०

राज़ दशरथ वाद गोमुत कयंथय
बिहर (विरह) चाने ओस गोमुत मयंथय
यंष शापुक ओस बहान लोलो ... क्य०

वाद पोलुथ मानिथ करथ इकरार
मर्यादा थावथ च्यय बरकरार
पान भगवान छुक अवतार लोलो ... क्य०

सीता माता सृत्य ह्यथ बोय लछमण
बुज़ं जामय वलिथय गोमुत वन
लूक पामन थावथम म्य जाय लोलो ... क्य०

च्यय रोस्तुय सोरुय छुय यि असत
राज ताज म्य कँह छुम्न हाजत
त्राव मोरुय त नेर च्यय पत लोलो ...क्य०

मन,नाविथ यूयं अनथ क्या छे बड कथ
शमहस प्यठ परवान यिथ करान गत
ह्यथ व यिमय सोरुय परिवार लोलो ... क्य०

ओश हारान त्राव भरतुय वन कुन
मातृ मावाह साबित कयथुय द्युतुन
तोत वातिथ माय रोट नाल मति लोलो ..

वन (हा) ततिकुय य हाल कँह छुम्न ताकत
वुछत कलमन ति मे क्या ह्योतनम पथ
अति ज्ञानवान ति गय हारान लोलो .. क्य०

दिलास दिथ भरतन त्यलि मोनुन
वाद ह्योतनस यलि भगवान ज़ोनुन
द्युतुस तम्य पनुन निशान लोलो ... क्य०

ख्राव विचनस अद तति वापस आव
चुदहान वयंन तखतस थावन ख्राव
राम सुमरिथ राजाह कोरुन लोलो .. क्य०

रुघनाथो हावमाव यलि त्रावख
त्यलि भरतस ह्य स्वभाव प्रावख
अद श्रीराम त्यलि करिय साल लोलो०
क्याज़ि चोलहम म्यानि श्रीराम लोलो ॥

[रामायण एक श्लोक में]

आदौ राम तपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चन
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसंभाषणम् ॥
वाली निग्रहणं समुद्रतरणं लंकापुरी दाहनम्
पश्चात् रावण कुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम् ॥

२२. श्रीराम वापस अयोध्या में

सा'रिय नीयंतव लोल त मायि लोलो ।
आव श्रीराम अजोध्यायि लोलो ॥

राज़ हुकुमय गोमुत आसुय बन
चोदाह् वरीह् पूर गास असि निश छ्यन
बुज़-ज़ाम, वलिथ ह्यथ लछमण लोलो०

राज़ दशरथन कीकियि वाद दिथव
वाद पा'लिथ तिथय सु गव मरिथय
मन्थरायि हुन्द ओस बहान, लोलो०

पान भगवान अवतार छुय आमुत
राज़ दशरथस कौशल्यायि ज़ामुत
पृथिवियि भोर वालनि आव लोलो०

भरत जियन पान भगवान ज़ोनुन
भ्रातृ-मावा प'ज्य पा'ठिय होवुन
ताज त्राविथ राजा कोरुन लोलो०

बोज़ वन मंज़ कार कम कर्यथय आव
मर्यादा पुरुषोत्तम (तवय) प्योस नाव
ग्युतन मुनिय यंथन विस्तार लोलो०

बुछ्त रावणस द्रव रोस गव अहंकार
मद वोलुन मा'रिथ लोभुन मूलद्वार
लंकायि सान कोरनस सूर लोलो०

चोदाहि वहुयं बन मंज़य फीरिथ आव
वछि वालिजि कयंतोस सा'रिय भाव
अज़ छियि छोत असि पूरि-पूर लोलो०

करिथ मेहराब शूभराविब बाज़ार
जल सम्यतव मशरिथ सोर कारबार
राम - रामय परिव प्रथ जायि लोलो॰

यिय बूज़िथ डीशिथ द्राय सा'रिय
अथि पम्पोश ह्यथ रूद्य चोपारिय
मरिथ लोलाह् रूद्य सीबायि लोलो॰

रुघनाथो दास-माव थाव पूरिपूर
बोज़ मरतस श्रीराम पान आव तूयं
मन शोमरिथ राम राम ज़प लोलो
आव श्रीराम अजोध्यायि लोलो ।।

श्रीरामराम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम धनुजातक राम राम
श्रीराम राम रणकर्कष राम राम
श्रीराम राम शरणं मब राम राम



२३. मंज़ल्य लीला

ही गोविन्द ही गोपाल लोलो
मनि ललवथ करया गूर गूर लोलो

दीवकियि मातायि निश कांद मंज़ जाक
नन्द गोरिनि घर मंज़ नोन च्यय द्राक
स्वर्ग द्वार ब्यु बिन्दराबन लोलो०

ऋष तय मुनि सायं क्या लग्य विसने
वेष धारिथ बाल लीला आय वुछने
तप त ज़प क्या गोख सुफल लोलो०

कंसन शेछ्य बूज़ यलि, रूदुस न ह्यस
कौमारी ज़ायि निश वसुदीवस
ह्यचिन मारज़ बनेयि वुज़मल लोलो०

आकाश वाणी कंसन यलि बूज़य
दोपन चोन घातक बिन्दराबन वोतुय
मोठुस तोषुन होशिसुय डोलयि लोलो०

दुध चावनि पूतना तूयं सूज़नस
अछि वामय श्यामन प्राण केडयनस
दिवताह्व पोशिवशुंन कोरय लोलो०

राक्षस त दूत कम कम वातिय
कृष्णनि अथ मऽर क्या गय मूझिय
हद र'स्यतिय मद कूत्य वथिय लोलो०

वुछत यन्द्रस क्या गव रूदुस न बूध
त्रोवुन गूयं बालकन कहरुक रूद
तुलन किसि प्यठ गूवर्धन त लोलो०

बछ गूपियि अमनायि मंज़ आनस
तन नावनि मनवनि मगवानस
राधायि हुन्दि मशाकन्दूर लोल॰

रास ख्यूलुन गूपियन करिथ अथवास
वुछने आय देवता नारुद त व्यास
शुभ वेला तमि विज़ि द्रायि लोलो॰

यलि पृथिवियि खसान पापन भार
त्यलि भगवान धारान छुय अवतार
पान भक्तयन करान छु रछपाल लोलो॰

रुघनाथो कृष्ण ज़पान रोज़
दासस तल लागुस साज़ तय सोंज़
यथ फलनय च्यति गुल्ज़ार लोलो
मनि ललवथ करयो गूर गूर लोलो

जयतु-जयतु देवो देवकीनन्दना यः
जयतु जयतु कृष्णो वृष्णिवंश प्रदीपः
जयतु जयतु मेघश्यामलाङ्गोऽमलाङ्गो
जयतु जयतु पृथ्वीभारनाशो मुकुन्दः ।

ॐ तत्सत कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम ।

२४. कृष्ण डेशोम

अछ व'टिथय कृष्ण म्य डेशोम
अछ मुचरिथ कोत सना गोम
मनि मंज़लि म्य बलना ह्योम ... अछ

दीवकियि निश वसुदेवलालय
ज़ाव कांद मंज़, द्राव काल्यकालय
पृथिवियि हुन्द मोर वालनि गोम ... ०

नन्द-जसदायि मोरनय क्या
बाल -लीला तिमन हावनि आव
बिन्दराबन शूभरावनि गोम ... ०

वुछत तति कम कम कर्यनय कार
पान आमुत ओस कृष्ण - अवतार
गूकल मंज़ म्य छाडना व्योम ... ०

हृद र'स्य गय रात्तस बुर्बाद
कर्यन संसार निश आज़ाद
कंसस तूर्य पान मार,नि गोम ... ०

अकि दाम गयि पूतना मयंथय
आस आमच ज़हर बब मयंथय
पान मक्तयन सुख द्यावनि गोम ... ०

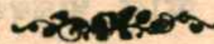
गूपियन सञ्त्य खेल मारान ओस
शुरिनय सञ्त्य गाव रछान ओस
राधायि सञ्त्य राम खेलनि गोम ... •

दूर्यर वञ क्यथ बा' चालय
गूयं यितमो म्यानि रछपालय
दुःख दोद म्य कूत्य व्यतराव्योम – •

चानि वेरि च्यय पान कोरुम - अर्पण
वञ कात्या बदलाव फयरन
भावनाये मन शोमराव्योम ... •

सर्वव्यापक छुक दपान पानय
रछवुन छुक त बां क्या ज़ानय
ज़ाप्य वाल्यन निश पानय गोम — •

रघनाथो गछुस शरणय
योद फेरन कात्या करणय
दास माबय गछ करान चय काम — •



कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च
नन्दगोप कुमाराय श्री कृष्णाय नमो नमः ॥

२५. टाठि लालो

यच काल गव म्य प्रारान यिखना ।
टाठि लालो दर्शुन दिखना ॥

नाद लायान छुस लोलहतिये
सोर संसार त्रॉविथ पतिये
पायि थदि म्यानि पायस प्यखना ... ०

दूर्यर चोन त्यथ बा चालय
जल यितमो म्यानि रछपालय
दुख त दोद म्यान्य कासान यिखना ... ०

छुक च म्याञ्न आशन हुंद ओश
दर्शन चानि क्या खसि म्य बोश
घोष त्रॉविथ होश म्य दिखना ... ०

अछ लोसम वत चानि छारान
बुक बुक ओश अछवय ब हारान
माय छम चांञ्य मुख हावखना ... ०

आसवुन छुक चय हनि हने
मनि आसिथ यित् म्य वने
कम क्या गछिय सन्मुख यिखना ... ०

पाद
मनि
दास

कया च़ यिखना अज़ म्यानि सालय
दुध हर किय मरयो प्यालय
मलाल त्राव दामा चखना ... •

पाद सीवय बजि भावनाये
मनि - पम्पोश लागय शेरे
दास छुस चोन वासा करखना...•

दाम माव छुस रघनाथ गाराम
व्यन पम्पोश मादल चाराम
प्राराम छुस चय लाराम यिखना
टाठि लालो दर्शुन दिखना ॥

श्रीमद्भागवत एक श्लोक में

आदौ देवकि-दव गर्भजननं
गोपीगृहे वर्धनं
माया पूतन जीवतापहरनं
गोवर्धनो धारणम् ।
कंसच्छेदन कौरवादिहननं
कुन्तीसुता पालनं
एतद्भागवतं पुराण कथितं
श्रीकृष्णलीलाऽमृतम् ॥

२६. माऽज्य ज़ाला

पस छिय गामत्य यियतनय आर ।
माऽज्य ज़ालायय बोज़ साप्य ज़ार ॥

ह्यार चुदाह क्या छय मशहूर
मक्तिजननय निश मा छय दूर
वुछ खित्र क्या लगान छुय दरबार ... ०

आना करिथ ओमचे ज़ेरे
मन शोमरिथ क्या खसान हेरे
मशराविथ सोरुय कारोबार .. ०

कन्द नाबद वसतर त भूषण
पोशि डाल्या ह्यथ क्या छे तोषन
ह्यावि दर्शुन करि अङ्गीकार ... ०

छिय माऽज्य आमित चानि वेरे
सोरुय अरमान वन्य असि नेरे
कम क्या गछिय लुक चय मुकार ... ०

ज्योति स्वरूप छख मुख मंज़ द्रामच
जगि बोर चय वालनि आमच
ज्वालामुखी नाव चोन छुय शूभिदार ... ०

चय शेला छख चय चण्डिका
चय शारिका ब्यियि छख शारदा
चय सरस्वती छख दिवान पुरस्कार ... ०

चय गंगा ब्यियि यमना छख
कालिका नाव स्यद्ध लछमी छख
चय नवदुर्गा दिवान मूलद्वार... ०

चय यष्ट दीवी राज्ञा छख
चय शुत्र घातिनी सर्वदा छख
सायँनय शत्रन करान संहार

रुघनाथ डेडितल करान इन्तिज़ार
अञ्जलि गंडिथ क्या छुय उमेदवार
यमि अवलनि मंज दित वथ तार
माज्य ज़ालायय वोज मान्य ज़ार ॥



२७. अमरनाथ यात्रा

सुलि बक्ता यिन गछ़िय ज़ाये ।
गछ़ अमरनाथ कर यात्राये ॥

ओम् गणपत जी सुन्द कर्यँथय ध्यान
गछ़ शुराहयार कर तति श्रान तय ध्यान
नम शंकराचार्यस त ब्यियि दुर्गाये...०

पोम्पर चि वति व्यजिब्रोर क्यां छुय न्यूर
तति चछ़ वरस दिज़ि पूरि पूर
नख च्य रोज़िय ड्खि तय दाये...०

नेर अन्ननाग मटन नज़दीक छुय
मुक्ति लमख सिरयि बल कयंथय च्य
पान वोनमुत छुय मगंशाखाये...०

वति जाया नाव तत आशमुकाम
पत मामलीश्वर सुन्द परमय धाम
सरकाय इन्तिज़ाम नोनवन क्या जाये...०

वातिय पहलगाम थक फ्रक त्राविथ
रोज गणशिबल दर्शुन च़ करिथ
शिव-शम्भु मनि थव राये ..०

यलि फुलनि ह्यन सगरमालय
नेर चन्दनवोर वुछ़ कोह त नालय
पिश बाल खस रायि त त्राये

वस शेशनाग मंज़ कर च्य श्रान
तर्पण करिथ बनिय च्य कल्याण
रोज वावजन भक्ति भावनाये...०

वाव बाल किन्य वथ क्या छय ज़ीठ
महागुनसे खसनुय छुय क्रूठ
बोल शंकर, करिय रक्षाये

पांछ नदियि छय मयंज्यन गम
पचतरणी नाव अथ छु सगम
तीर्थश्रान कर च़ बजि भावनाये...०

अद्य अद्य खस भैरव-वालस
वार वार चय वातख मुकामस
वुछ अमरावती मज शीनमाये ०

तन नाव मन थाविथ सावधान
माया त्राविथ छयाये ज़ान
मथ भभूती अथ कायाये...०

बिल त मादल विन मनि पम्पोश
लाग शंकरस थाविथ ह्यस होश
मन शोमरिथ अछ़ गुफाये...०

अमृत ज़लस लिंग छिय बनान
वुछ़ज़ि वार पाठय शिव छुय सनिधान
युहोय अमरनाथ करि असि सहाये...०

ज़गत् ईश्वर त्रे कारण छु सामी
तवय बापत महेश्वर नाव नांमी
कर दर्शुन लोल तय माये...०

ज़ीव रूप छुस तमि किथ नाव कृत्या
सत चित आनन्द शुद्ध भाव परमात्मा
मनि मंज़य करुस च़ जाये...०

ओर फीरिथ वार बात थजवोर
दर्शुंन कर थविथ च् न्यथ गोर
छोटा अमरनाथ छुय वनान आये ...०

नवदल करिथ यात्रा सुफल
जन्मच चलान सारय वदल
पितृ श्राद्धा कर च श्रद्धाये ...०

भगवत नाम मनि मंज छुय गुप्त
कुनि बाज़ार मोल्य हीन छुय मुफ्त
पर क्षण क्षण ॐ नमः शिवाये ...०

रुघनाथो दास माबय च् सुर
शिव-शंकर अमरेश्वर पर
शान्त स्वभाव मनि धारणाये ...०

गल्ती माफ योद गोम केंह भूल
युस परि तस अच्छनुय चॅल शूल
पननि पान शंकर करि उपाये
गछ् अमरनाथ कर यात्राये ।।

ॐ नमः शिवाय श्वाश्वताय
शकराय शम्भवै ।।३।।

यह तन यम मन हुए न अपना
यह सब माल तुम्हारा हैं
जब चाये तब तू ही लेवे
कुछ ज़ोर नहीं हमारा हैं



२८. लोलुक – जर

छुम होल गोमुत लोलकुय जर
छुम न बलर्थनि छुम न बलर्थनि
ह्य क्या ब कर मल छुम मनस
युस न चलर्थनि युस न चलर्थनि ।।

छुम यी कपालस लिखिथय-तय भूग भूगि आस तंग
कमज़ोर जिगर गोम मय सोयर - सोयर छुस ब ग्रलनि
छुस ब अलनि

क्या कम गछि यम ह्लि अछर-योद सद मय करख चय
पर्य-पर्य पथर गोमुतुय बय - छुस न नर्मनिय छुस न नर्मनिय

छुम डर म सठाह कर क्या ब-हावतम रऽच वथ
छुम लरज चामुत ह्रद वावय–पान ब ह्रर्थनि पान बहर्थनि

वोनमुत च पानय खिम शरण यिवान मय कुन छिय
मलचर जि मनन हुदं तीमन–जल-जल ब छलर्थनि
जल जल ब छलर्थनि

आशावानन हंद अऽश गाश म्याने चस
दया करतम तीहंदय पासय यिम च सोर्थरनि यिम च सोर्थरनि

छुस ना ब पथर प्योमुतय वऽन थोद मय चोव तुलतम
मोकलावतम मोह - जाल कासतम - च मय नादानी
च मय नादानी ।।

ओसुक कुनुय तय छुख कुनुय आसक च कुनुय - निष
कांह छुनय चय हुय नय चय थोद कांह छुख च लासअनि
छुख च लासअनि ।-

दासो च पनुन वाद चित्तस - पाव सोरुन बथ
रुघनाथ सुन्दुय ध्यान सो,र गाछ तार तरअनि गछ तार
तरअनि ।।

ॐ हरे राम

२६. 'आराधना'

मोख मय ह वतम सुदर्शनय
बलयो चानि दशननय ।।

सार उपनिषद गाव रूप गीता
दोयतस अमृत श्रीकृष्ण दाता
सुय दोद चोवथन वोꣳ अर्जनुय ।।बलयो—०

क्या कम गछि मेत चाव अक दामा
गरि गरि बोलहा श्याम श्यामा
दꣳवि बꣳति तरहा अक्य क्षणाय ।।

भक्ति - भावनाय यिम भक लटि म कुन
तिमनिय निशि छुसन कुन विछि बयोन
वोनमुत पान छुय ही निरञनय ।।

वासुदेव - हीवकी जाख कृष्ण गन्दरों
नंद - जसुदाय रोछुक कोछ अन्दरों
बाल - लीला हवथक ब कोताह बनय ।।

राधा सीऽत सीऽत मारयथ छालय
गुर-शुर त गूर-बाय रटिथ नालय
थन-चूर क,रि क,रि रास खेलनय।।

जय-जय भविनय चय गोपालय
भक्ततन हृदे रखपालय
कंसस मारवन ही नंदनंदनय।।

द्रोपदी नाद दीतुय दारिका वासी
यलि दुशासनन हच नंग करनि
वस्त्र सूजथस तथ छन छनय।।

सोदामस चन-फोल खटनस क्या फीयूर
दरिद्र-भावन ओननस गयूर
भावकुय सीयुर खयथ जि मकलोवखनय।।

कर्मव अनुसार माज प्योस थनय
समसार आवलिनस मज आस हनय
यन आम बुजर तय याद प्योहम ततय।।

बौद्ध छुम न वातान छसय ब अनजान
थोद छुसन कस सीत कर मान मान
अथ छोन त नेथ-नोन छुस निर्धनय।।

रुघनाथ प्रारान शुभ दर्शनस
दास भाव चय कुन थवथ हस
तार दिम अवसर ही जनादर्नय।।
बलयो चानि दर्शननय

ॐ अंन्त कालि जनार्दना

३० 'प्रार्थना'

हट वासुक जट गंगा जग्ररी
शिवजीग्रो लगयो पग्ररी ।।

हेमालस पग्रठ चोन ग्रासन
भक्ति जनन्य मनि छुख भासन
हथ उमा नोन चोपग्ररी ।। शिव जीग्रो लगयो पग्ररी ।।

नग भस्मा ग्रगन छुख मलिथिय
मृग चम, मा तनय छुख वलिथिय
कासवुन छुख सारनीय खग्ररी ।।

ग्रादि दीव युस गणपत कुमार
प्रथ यज्ञनस मंज छुख ग्रादिकार
गुरु ग्रनुग्रह यस ग्रासि जग्ररी ।।

फेरवुन छुख चय हनि हने
मनि ग्रसथ यत मय वने
वृषभ बाहन सीत हथ हारी ।।

क्या चय यखना ग्रक लटि सालय
कद नावद बरमय थालय
भक्ति - वत्सल ही जटाधारी ।।

ग्रादि - ग्रन्त चोन कग्रमसना जोनुय
नजि नोव कांह नजि छुय प्रोनुय
श्रेष्ठ सथव छुख करान समहारी ।।

आशुतोशय नाव सीत टोठान
वुछत मुनियन त मन छय लुमान
यम टअठ छिम वन्दयो सअरी ॥

मसतान छुख बेपरवाये
अथ रूपस वुछने आये
निथ पुजान छय विचारी ॥

खोश सपदान छख अक जेरे
मनि पंपोश लागय शेरे
वालान ख भपापयन बअरी ॥

गंग जल मंज यम करन श्नान
तर्पण सीत षअतर छीव तरान
यन-गछनच मोकलान बअरी ॥

सन्मुख यिम नेत्रण दीम गाश
वन सुरीहत बस छम चअन आश
तार दीतम यमय समसारी ॥

दासन हुंद छुख हितकारी
रुघनाथस त दीत अनवारि
मचराव तस बरनयन तअरि ॥

। शिवजी लगयो पअरि ।

ॐ शुभं अस्तु सर्वं जगताम्



३१. स्वामी कराल बाब की सेवा में

२ फरवारी १९८४, उदमपुर

पान बथरय छुख थदय पाय
बब सानो रोजतम सहायो।

मंज टीकरय, नोन छुख द्रामुत
आमुत छुख, चय अवतार
पान योल्लमुत मऽज राज्ञनग ।।

कराल गोंड नाख छुख निश्बन्धनय,
अथ डोलनय पान नंदनंदनय
मन मंजय रोटथन शाये ।।

कराल बबय दीतुनय खताब
दर्शुन हाव गमत छय बेताब
वत चाने अस वुछान आवे ।।

सोनमुख यिथ दीतऽ आर्शीवाद
यीन सीतय मन अस गछ शाद
वछ वनज माय बरान आये ।।

पज मावय कोरुख अस याद
चानि यन सीत खान गव आबाद
दूर गय सन सरय दुर्दशाये ।।

आसन दीथ बज भावनाये
मन पंपोश लागोव शेर
मंज हृदयस अस करय जाये।।

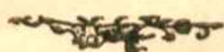
ईक दृष्टि छुख बुछान सारनय
न च गैर कांह न जि छुय पननुय
मट च सेरय छीय हितमतये॥

क्या च यत्तना बय सान सालय
खीर खंडय बरहोय थालय
पाद छलय बज भावनाये।।

दास भावय रघुनाथ छुय अब
पान सहायक रूजित छस बब
अँजलि गंडिथ हथ सिबाये॥
बब सानो रोजतो सहाये

ॐ शिवं अस्तु सर्व जगताम।।

प्रस्तुतकर्ता अन्जू कौल



सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपाल नन्दनः।
पार्थो वत्स सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीताऽमृतं महत्॥

अर्थ :-

छि मिसलि गाव सार उपनिषद।
ति श्री गीता छय श्रेष्ठ अमृत अमिस दौद।
अमिस वोछ तेज़ फ़ाइम अर्जुन छु चनवोल।
ति दोयनस श्री कृष्ण भगवान हेन बोल॥

ॐ कृष्णं वन्दे जगद्गुरु



रग रोस्त बेरंग कति छारन तय
बन्तय सु नुन्दुबोन बोजि ना म्योन

यतियय फीरस जगलन कोहन तय
फीयं फीयं फ्युर गोम त फेर हय श्राम
नेरना न्यन्दरि हत्त अडरातन तय...बन्तय०

लोल लुलि लालबन थाविना कनतय
मुलि चीयं कुनि शायि ह्यमहस माम
पोष व्थरस लरि सावस मनतय...०

वूज्य वूज्य बोज़वुन ति वुम्त बोज़तय
लूय्र लायुन गोम लोल हय श्राम
मेरे डेजि गण्ड ज़न मुचरावन तय . ०
पांटयदार पलंगस वथरस सुवतय
जालार मुक्तुक अज़ल्यन ताम
चारि थव्य थव्य छुम चूरि रोज़नतय...०

दिमहस आलव वुथि छुम वनतय
वालिज वाच़म हिरिसय ताम
दम्फुटय गगस छुम अंन्दरिय दमतय...०

वन कस युथ ह्य, कस सना गयवय
सत्य सत्य आंसिथ ति ड्रेण्ठनय श्राम
वुजमलि खेला करनम ज़नतय ...०

कुनिरुक ननिराह कुनि छन हनतय
करार कुनि छम्त वोत हय शाम
प्रायं प्रायं प्रारिथ तोति प्रारनतय...०

निश वातिथ प्यव सुरच्रत ज़नतय
नत क्याज़ि गछिहेम पुकतस खाम
प्रोरय आलव त ओर योर कनतय.. ०

यारबल काकव्यव कछहस कलतय
अथ मज़ बाज़ गोम अथ प्योम जाम
वुठसय लागिथ थफ दिचनमतय...०

वञ केह कर ठथस्य कति छारनतय
हुकिहय श्यावमा छायि गित्य करान
छायि गितिनय मंज ख्यूफ ह्यथ जनतय
बन्तय सु तुन्दबोन। बोज़ि ना म्योन।

रामनामजपतां कुतो भयं
सर्वतापशमनैकभेषजम्।
पश्य तात मम गात्रसन्निधौ
पावकोऽपि सलिलायतेऽधुना॥
(प्रहलाद अपने पिता से कहता है)

जानकीनाथ कौल 'कमल'



रघुनाथ कौल

मिलने का पता :- 'कौल निवास'
द्राबोयार, हब्बा कदल ।

Printed at : Bnsi Art Press, Sgr.